

बारिश के दिनों में पशुओं की देखभाल



डॉ. अमित कुमार¹
डॉ. संजु मंडल²
डॉ. अनिल गट्टानी³
डॉ. संकल्प साहू⁴
डॉ. शशांक विश्वकर्मा⁵

¹असिस्टेंट प्रोफेसर, वेटेरिनरी फिजियोलॉजी और बायोकेमिस्ट्री विभाग, महाला वेटेरिनरी कॉलेज रींगस, सीकर, राजस्थान- 332404.

²असिस्टेंट प्रोफेसर, वेटेरिनरी फिजियोलॉजी और बायोकेमिस्ट्री विभाग, कॉलेज ऑफ वेटेरिनरी साइंस एंड एनिमल हसबैंडरी, जबलपुर M.P. -482001

³प्रोफेसर, वेटेरिनरी फिजियोलॉजी और बायोकेमिस्ट्री विभाग, कॉलेज ऑफ वेटेरिनरी साइंस एंड एनिमल हसबैंडरी, जबलपुर, M.P. -482001

⁴MVSc., वेटेरिनरी सर्जरी और रेडियोलॉजी विभाग, कॉलेज ऑफ वेटेरिनरी साइंस एंड एनिमल हसबैंडरी, जबलपुर, M.P. -482001

⁵PhD, वेटेरिनरी गायनेकोलॉजी और ऑब्सेट्रिक्स विभाग, कॉलेज ऑफ वेटेरिनरी साइंस एंड एनिमल हसबैंडरी, जबलपुर, M.P. -482001

*अनुरूपी लेखक

अमित कुमार*

परिचय

स्वस्थ पशु ही किसान की असली संपत्ति होते हैं, जो दूध, गोबर, श्रम तथा उत्पादन के अन्य स्रोतों के माध्यम से परिवार की आय में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। बारिश का मौसम जहां खेतों और फसलों के लिए जीवनदायिनी वर्षा लेकर आता है, वहीं पशुपालन की दृष्टि से यह समय अनेक चुनौतियां भी प्रस्तुत करता है। अधिक नमी, कीचड़, परजीवी, संक्रमण तथा तापमान में उतार-चढ़ाव पशुओं के स्वास्थ्य और उत्पादकता को प्रभावित कर सकते हैं। ऐसे में पशुपालकों को सावधानी और सतर्कता के साथ अपने पशुओं की देखभाल करनी चाहिए, ताकि वे स्वस्थ, सुरक्षित और उत्पादक बने रहें।

स्वच्छ और सुरक्षित आवास रखें

लगातार नमी और गंदगी के कारण पशुओं में त्वचा, खुर तथा अन्य संक्रमणों का जोखिम बढ़ सकता है। इसलिए सबसे पहली आवश्यकता पशुओं के लिए स्वच्छ, सूखा और सुरक्षित आवास उपलब्ध कराना है। पशुशाला हवादार हो तथा उसमें बारिश का पानी जमा न होने पाए। फर्श पर सूखा भूसा या अन्य उपयुक्त बिछावन बिछाया जा सकता है, जो नमी को सोखने में मदद करता है। गीले बिछावन को नियमित रूप से हटाकर उसकी जगह सूखा बिछावन डालना चाहिए। पशुशाला की नियमित सफाई और उचित जल निकासी व्यवस्था पशुओं को नमी और संक्रमण से बचाने में सहायक होती है।

इसके साथ ही, भोजन और पानी की गुणवत्ता पर भी विशेष ध्यान देना चाहिए। बरसात के मौसम में हरा चारा अधिक मात्रा में उपलब्ध होता है, लेकिन अधिक नमी के कारण यह जल्दी खराब या फफूंदयुक्त हो सकता है। गीला, सड़ा या फफूंदयुक्त चारा पशुओं को नहीं देना चाहिए। चारे को साफ और सूखे स्थान पर उचित तरीके से संरक्षित करना चाहिए। पानी की स्वच्छता पर भी विशेष ध्यान देना आवश्यक है, क्योंकि बारिश के दौरान जलस्रोतों में गंदगी और रोगजनक सूक्ष्मजीवों के प्रवेश की संभावना बढ़ सकती है। इसलिए पशुओं को हमेशा स्वच्छ और सुरक्षित पेयजल उपलब्ध कराना चाहिए तथा पानी के बर्तनों की नियमित सफाई करनी चाहिए।

कीट और परजीवी नियंत्रण जरूरी

इस मौसम में कीट और परजीवी नियंत्रण भी बहुत जरूरी है। गीले और गर्म वातावरण में मच्छर, मक्खियां तथा टिक्स जैसे बाहरी परजीवियों की संख्या बढ़ सकती है, जो पशुओं में विभिन्न संक्रमणों के प्रसार में भूमिका निभाते हैं। टिक्स द्वारा बेबेसियोसिस और थीलेरियोसिस जैसी बीमारियां फैल सकती हैं। इन बीमारियों से पशुओं में बुखार, कमजोरी, खून की कमी, वजन कम होना तथा गंभीर स्थिति में मृत्यु तक हो सकती है।

इसलिए टिक नियंत्रण पर विशेष ध्यान देना चाहिए। पशुशाला और आसपास के क्षेत्र की नियमित सफाई करें तथा पशुओं के शरीर और त्वचा की नियमित जांच करें। पशुओं की स्वच्छता बनाए रखना भी आवश्यक है। आवश्यकता होने पर पशु चिकित्सक की सलाह से अनुमोदित एवं पशु-हितैषी कीटनाशक या टिक-नियंत्रण दवाओं का उचित तरीके से प्रयोग किया जाना चाहिए।

टीकाकरण और स्वास्थ्य जांच

बारिश के मौसम में संक्रामक रोगों का जोखिम बढ़ सकता है। इसलिए पशुओं का समय पर टीकाकरण करवाना और स्थानीय पशु स्वास्थ्य विभाग द्वारा निर्धारित टीकाकरण कार्यक्रम का पालन करना चाहिए। आवश्यकता के अनुसार पशुचिकित्सक की सलाह से कृमिनाशक उपचार भी कराया जाना चाहिए।

पशुओं में बुखार, भूख में कमी, अत्यधिक कमजोरी, दस्त, खांसी, नाक या आंखों से स्राव, त्वचा पर घाव अथवा दूध उत्पादन में अचानक कमी जैसे लक्षण दिखाई दें, तो उन्हें नजरअंदाज नहीं करना चाहिए। ऐसे मामलों में समय पर पशु चिकित्सक से

संपर्क करना आवश्यक है। बिना चिकित्सकीय सलाह के दवाओं का प्रयोग करने से बचना चाहिए।

पशुओं की शारीरिक और मानसिक देखभाल

बारिश के कारण पशु अक्सर लंबे समय तक बाड़े तक सीमित रह जाते हैं, जिससे उनकी सामान्य शारीरिक गतिविधि प्रभावित हो सकती है। इसलिए जब मौसम साफ हो, तो उन्हें सुरक्षित और सूखे स्थान पर कुछ समय चलने-फिरने का अवसर देना चाहिए। साथ ही, पशुओं को पर्याप्त आराम और आरामदायक बिछावन उपलब्ध कराना भी जरूरी है। पशुओं के साथ नियमित संपर्क और उनकी सामान्य गतिविधियों को बनाए रखना उनके शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य के लिए लाभकारी हो सकता है।

निष्कर्ष

बारिश का मौसम पशुओं के स्वास्थ्य के लिए कई चुनौतियां लेकर आता है, लेकिन उचित सावधानी और नियमित देखभाल से इन समस्याओं को काफी हद तक कम किया जा सकता है। स्वच्छ और सूखा आवास, सुरक्षित पेयजल, गुणवत्तापूर्ण चारा, नियमित सफाई, परजीवी नियंत्रण, समय पर टीकाकरण और पशु चिकित्सक की सलाह पशुओं को स्वस्थ रखने के महत्वपूर्ण उपाय हैं। स्वस्थ पशु न केवल बीमारियों से सुरक्षित रहते हैं, बल्कि उनकी उत्पादन क्षमता और किसान की आय को बनाए रखने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसलिए बारिश के मौसम में पशुओं की नियमित निगरानी और समय पर देखभाल को पशुपालन का आवश्यक हिस्सा बनाना चाहिए।